उन्नति अमेरिका में

राजीव सोनी

लंबी उड़ान के बाद कुछ उनींदा सा महसूस करता मैं सैन फ्रांसिस्को हवाई अड्डे के आव्रजन डेस्क के सामने लगी लम्बी कतार में खड़ा, धीरज से अपनी बारी का इंतजार कर रहा था। मैं अमेरिका में प्रवेश को नियंत्रित करनेवाली प्रणालियों के बारे में सोच-सोच कर हैरान हो रहा था। 9/11 के बाद से यह प्रणालियां बहुत कड़ी हो गई हैं लेकिन यह तो होना ही था। मेरे कानों में आवाज आई : ''काउंटर नम्बर 6, कृपया....'', एक सुंदर लेकिन सख्त दिखती महिला ने मेरी आंखों में झांककर कहा : ''कृपया पासपोर्ट दिखाएं...''

''आप बारह बरस से अमेरिका आते रहे हैं, आपने अब ही अमेरिका में काम करने के लिए आवेदन क्यों किया?''

''बात यह है मैडम कि मैं चालीस बरस का हूं और इस खूबसूरत देश में काम करने का मौका नहीं चूकना चाहता.....''

''यह तो काफी सही कारण है,'' उसने मुस्कुरा कर मेरे पासपोर्ट पर मोहर लगाई और शुभकामनाएं देते हुए कस्टम्स की ओर जाने का इशारा किया।

मैं अपने सामान से लदी ट्रॉली को धकेलता बाहर आ रहा था कि दो जाने पहचाने चेहरे दिखे- मेरा भाई और मुझे काम करने के लिए अमेरिका निमंत्रित करनेवाली कम्पनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रकाश मीरचंदानी उर्फ पीटर। प्रकाश हाई स्कूल के जमानों के मेरे दोस्त का दोस्त है।

प्रकाश ने बुलन्द आवाज में स्वागत किया, ''अमेरिका में तुम्हारा स्वागत है! तुम्हारे लिए कुछ अच्छी खबर है और कुछ बुरी'' मेरी प्रतिक्रिया का इंतजार किए बिना उसने बताया, ''अच्छी खबर यह है कि आव्रजन, कस्टम्स वगैरह की बाधाएं पार करके तुम आखिर यहां आ पहुंचे हो। तुम अमेरिका में हो! और बुरी खबर यह है कि परसों से मेरे पास काम नहीं रह गया और ... और इसलिए तुम्हारे लिए भी काम नहीं है।''

खासी दीदादिलेरी से प्रकाश ने खबर पूरी की, 'मैंने परसों अपनी कंपनी बेच दी, और नए मालिक लोग छंटनी कर रहे हैं।''

मैंने हैरानी से पूछा, ''इसका क्या मतलब हुआ?''

''इसका मतलब हुआ कि तुम नौकरी से निकाल दिए गए हो,'' प्रकाश ने ऐसे आराम से बताया जैसे बाहर का तापमान बता रहा हो।

''नौकरी से निकाल दिया? पर अभी तो मैं ने काम करना शुरू ही नहीं किया।''

मैं सोच में पड़ गया- अब क्या करूं? दुनिया के सबसे शानदार देश की भूमि पर जमीन रखे मुझे अभी आधा घंटा ही हुआ है और मैं बेरोजगार हो चुका हूं! प्रस्थान टर्मिनल की ओर मुड़ जाऊं ?

मैं बौखला उठा था- भारत में काम बन्द करना, पिछले पूरे हफ्ते की अफरातफरी, 22 घंटे से ज्यादा लम्बी उड़ान - और यहां सिर मुंडाते ही पड़े ओले और उनके नतीजे....

मेरा भाई कार चला रहा था और मैं यही सोचे जा रहा था कि प्रकाश ने मुझे 24 घंटे पहले आगाह क्यों न किया? मैं ठीक ढंग से नौकरी पाने का इंतजार करता, ऐसा तो नहीं था कि मैं कभी अमेरिका आया ही न होऊं या किसी भी कीमत पर और कैसा भी काम करने के लिए मरा जा रहा होऊं ।

मेरे सोचविचार को ब्रेक लगा, भाई की आवाज सुनकर, ''पैसे सम्हाल कर रखे हैं न?''

पैसे, पैसे! हे भगवान पैसे! अरे मेरे पैसे कहां

आफिसर लेक्स कहते हैं-

राजीव सोनी से अपनी मुलाकात के बारे में स्पैन संवाददाता से बात करते हुए ऑफिसर केनेथ लेक्स गले लगाए जाने या बीयर पिलाने की राजीव सोनी की पेशकश को स्वीकार न कर पाने को ले कर कुछ झेंपे हुए से दिखे। ''देखिये 9/11 के बाद से हम लोग कुछ ज्यादा ही आशंकित रहते हैं। मेरी सहकर्मी लैटिन अमेरिकी स्त्रियों के लिए किसी का गले लगाना अभिवादन का सबसे सहज तरीका है, लेकिन मैं उनसे भी गले नहीं मिल सकता।''

अभी भी सैन फ्रांसिस्को अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर तैनात केनेथ लेक्स बताते हैं, ''सुरक्षा नियमों के तहत हमें सख्त हिदायत है कि हम लोगों से व्यक्तिगत स्तर पर संबन्ध न बढ़ाएं। हमारा काम है हवाई अड्डों पर सुरक्षा प्रदान करना, सीमाओं की चौकसी। हमारी कोशिश रहती है कि लोगों से सही व्यवहार करें। लोगों की मदद करके मुझे खुशी मिलती है। मध्य-पूर्व और एशिया से आनेवाले कई लोगों को समझ में नहीं आता कि 9/11 के बाद यहां माहौल कैसा है या उनके साथ कैसा सलूक होगा। हमें इस चीज के लिए प्रशिक्षित किया गया है कि हम नस्ल या राष्ट्रीयता के आधार पर भेदभाव न करें। मिस्टर सोनी से मुलाकात अच्छी लगी। वह अच्छे आदमी हैं ।''

गए! मेरे तीन हजार डॉलर। चमड़े की थैली में रखे थे। लेकिन चमड़े की थैली है कहां? उसी में मेरा पासपोर्ट, आव्रजन के कागजपत्तर, इंटरनेशनल ड्राइविंग लायसेंस वगैरह भी हैं।

चार बाय दस इंच की उस चमड़े की थैली की तलाश में मैं ने कार खंगाल डाली- परेशान होते, गुस्से में, आजिज़ आकर, हताश होते, असहाय महसूस करते। कम्बख्त थैली गई कहां? अमेरिका में कदम रखते ही बेरोजगार हो जाना काफी नहीं था क्या? यह आफत टूटनी जरूरी थी? और वह भी शुक्रवार के तीसरे पहर जब लोग छुट्टी के मूड में

नाटकीय ढंग से अमेरिका में प्रवेश करने के बाद 2002 में सैन फ्रांसिस्को बे में सैर करते राजीव सोनी।

आ चुकते हैं?

मौका पाते ही हम यू टर्न लेकर हवाई अड्डे को मुड़ लिए।

हम भाइयों ने खोई थैली की तलाश के अभियान का श्रीगणेश पहले सहायता बूथ से किया। वहां मौजूद महिला ने सहायता करने में तत्परता दिखाई लेकिन कई जगह फोन मिलाने के बाद हाथ खड़े कर दिए। हवाई अड्डे से रोज करीब नब्बे हज़ार यात्री गुजरते हैं, यहां थैली की तलाश भूसे के ढेर में सुई ढूंढने से कम नहीं थी। घंटे भर विविध अधिकारियों से बात करने के बाद लग रहा था कि सोमवार को भारतीय दूतावास जाकर पासपोर्ट खोने की रपट दर्ज करानी ही पड़ेगी।

एक क्षीण सी संभावना बची थी- शायद कार में सामान रखते हुए थैली सामान रखने की ट्राली में ही छूट गई हो। जहां कार पार्क की थी वहां जाकर ढूंढते हैं। डेढ़ घंटे बाद थैली के मिलने की गुंजायश कम ही थी लेकिन कोशिश करने में क्या हर्ज?

आखिर लम्बेचौड़े पार्किंग लॉट में वह जगह मिल गई जहां भाई ने कार पार्क की थी। ट्रॉली रेलिंग के सहारे टिकी थी। थैली का कहीं अतापता न था।

कहीं वहां खड़ी कार के मालिक ने सामान रखने की ट्राली इस्तेमाल की हो और थैली.....

पंद्रह मिनट बाद एक परिवार नमूदार हुआ। क्या आपने ट्रॉली में थैली देखी? पिता अपने किशोर बेटे को लेकर आगे आए, ''स्कॉट को ट्रॉली में थैली मिली थी, उसने खोलकर देखा तो काफी पैसे थे। वह थैली मेरे पास लाया और हमें लगा कि हवाईअड्डे के अंदर बने सिक्योरिटी ऑफिस में थैली जमा करा देना ही ठीक रहेगा।''

अब करीब 1500 सिक्योरिटी ऑफिसरों में उस एक सिक्योरिटी ऑफिसर को कैसे ढूंढें जिसे थैली सौंपी गई है और जिसका नाम हमें नहीं मालूम?

दो घंटे तक सैकड़ों सिक्योरिटी ऑफिसरों से सवाल-जवाब करने के बाद हम आखिर केनेथ लेक्स नाम के ऑफिसर से टकराए। ''हां, हां मुझे काले चमड़े की एक थैली सौंपी गई थी जिसमें पैसे, कागजपत्तर वगैरा थे। मैं ने कागजपत्तर देखे तो लुफ्थांसा का एक टिकट मिला, मैं उनके दफ्तर से मालिक के बारे में मालूमात करने ही जा रहा था।''

मैं आश्चर्य से जड़ रह गया। मेरे मुंह से अनायास निकला, ''मैं तुम्हें गले लगा सकता हूं''?

''नहीं।''

''तुम्हें बीयर पिला सकता हूं?''

''नहीं।''

लेक्स हमें अपने डेस्क की ओर ले गए। आखिर चमड़े की काली थैली का दीदार हुआ- सबकुछ सही सलामत था, तीन हजार डॉलर भी।

छोटी सी रकम भेंट करने की मेरी पेशकश भी ऑफिसर लेक्स ने ठुकरा दी- ''मैं तो अपना काम कर रहा था।''

हार कर मैं ने पूछा, ''तुम्हें धन्यवाद कैसे दूं?''

''मुंह से यार, मुंह से।''

तब मेरे दिमाग की बत्ती जली- मैं लेक्स के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उसके सुपरवाइजर को पत्र लिख सकता हूं। मैंने उसका विजिटिंग कार्ड मांगते हुए उसके सुपरवाइजर का नाम भी पूछ लिया।

घर लौटते हुए मैं पिछले पांच घंटे के घटनाक्रम के बारे में सोच रहा था। क्या मेरा इम्तहान लिया जा रहा है? जो भी गड़बड़ हो सकती थी हो चुकी थी! हां, अब सब भला ही भला होगा! मैं एक नई दुनिया के जन्म का गवाह बनने जा रहा हूं!

अगले कुछ हफ्ते मेरे सामने चुनौती थी गुजारे के लायक काम ढूंढना, 2002 के बीच के महीने आर्थिक मंदी और छंटनियों की दोहरी मार झेल रहे बे क्षेत्र में नौकरी ढूंढने के लिए मुफीद नहीं थे। मेरे जैसे कंप्यूटर की गहरी जानकारी रखने वाले चार्टर्ड अकाउंटेंट के लिए भी नहीं।

आने के क्षण से ही मेरे सिर पर तलवार लटकी थी। अमेरिकी नौकरियां मेरी अनदेखी कर रही थीं, रोजमर्रा का जीवन मेरा मजाक उड़ा रहा था, अमेरिकी स्त्री मुझे घास नहीं डाल रही थी, लेकिन मैं भी यूं ही हार माननेवाला नहीं, पिताजी कहते थे न, ''पहले सराहना करो, समझने का काम बाद में.....''

एक बरस से ज्यादा बीत गया। 2003 का थैंक्सगिविंग करीब था, जाड़ा बस आया ही समझो।

मैंने ड्राइक्लीन करवाने के लिए अपना एकलौता सूट निकाला। उसकी जेबों की तलाशी में मुझे एक विजिटिंग कार्ड मिला- ऑफिसर केनेथ लेक्स।

अरे बाप रे! मैंने अब तक लेक्स के सुपरवाइजर को पत्र नहीं लिखा!

मैंने अपनी ढिलाई के लिए कुछ तर्कसम्मत से बहाने ढूंढने का असफल प्रयास किया और आखिर कार्ड जेब में डाल लिया। कई फोन करने के बाद ऑफिसर लेक्स से बात हो पाई- इस बीच उसका दो बार तबादला हो चुका था। उसने मुझे तुरंत पहचान लिया। मैंने अमेरिकी कस्टम्स और सुरक्षा के प्रमुख का टेलिफोन नंबर ध्यान से लिख लिया।

मेरी खुशी का ठिकाना न रहा जब सुरक्षा प्रमुख ने पत्र लिखकर मुझे सूचित किया कि मेरे पत्र के आधार पर ऑफिसर लेक्स की निजी फाइल में उसकी कर्त्तव्यपरायणता की तारीफ में टिप्पणी लिख दी गई है।

कस्टम्स एंड बॉर्डर प्रॉटेक्शन फोर्स के प्रमुख कमिश्नर रॉबर्ट सी. बॉनर ने ऑफिसर लेक्स की प्रशंसा करते हुए उन्हें पत्र लिखा। □

लेखक : *गुड़गांव के राजीव सोनी चार्टर्ड अकाउंटेंट, अध्यापक, लेखक और परामर्शदाता हैं। उनकी पुस्तक* अरमान इंका. *प्रकाशन के लिए तैयार है।*